आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2459 • उदयपुर, शुक्रवार 17 सितम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

निर्धन एवं विधवा महिलाओं को मासिक राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान के मानव मंदिर परिसर में गत सोमवार को समाज की गरीब, असहाय और विधवा महिलाओं को राशन वितरण किया गया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि हर माह की तरह सितंबर माह का राशन मदद शिविर निदेशक वंदना जी अग्रवाल के नेतृत्व में कोविड गाइडलाइंस के अनुसार रखा गया। इस शिविर में 54 महिलाएं मासिक राशन किट से लाभान्वित हुई। संस्थान के 10 सेवाभावी साधकों टीम जरूरतमंद जनों तक पहुंचने के लिए तत्पर खड़ी है।

चलने को आतुर लिंकन रानी

जब खुशियां द्वार पर दस्तक देती दिखाई दें और एकाएक वे काफूर होने लगे तो व्यक्ति अथवा परिवार पर क्या बीतेगी, उसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। ओडिशा के ब्रह्मपुरगंजाम निवासी कानूस्वाय के परिवार के साथ ऐसा ही कुछ हुआ कि खुशियां आती दिखाई दी और जब वे आ गई तो गहरे तक पीड़ा दे गई। कानूस्वाय की पत्नी ने वर्ष 2018 में कस्बे के सरकारी अस्पताल में अपनी पहली संतान को जन्म दिया। माता–पिता और परिवार आने वाले बच्चे के लालन–पालन को लेकर छोटे–छोटे लेकिन रंगीन सपने सजा रहे थे। बच्ची के जन्म की खुशी तो मिली लेकिन अगले ही पल वह खुशी बिखर गई। जन्म लेने वाली बच्ची के दोनों पांव पेट से सटे थे। माता–पिता इस स्थिति में शोक और संशय में डूब गए। डॉक्टरों ने किसी तरह उन्हें दिलासा दिया कि बच्ची के पांव को वे सीधा करने की पूरी कोशिश करेंगे, हालांकि इसमें थोड़ा वक्त लगेगा।

बच्ची को माता–पिता ने लिंकन रानी नाम दिया। इस तरह 8–9 महीने बीत गए। डॉक्टरों ने पांव तो लम्बे–सीधे कर दिए, लेकिन बच्ची अभी ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसका कारण दोनों पांव के पंजों का आमने–सामने मुड़ा हुआ होना था। कुछ अस्पतालों में दिखाया भी पर कहीं भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

किसी बड़े अस्पताल का रुख करना उनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था। वह दिन–रात मजदूरी कर जैसे–तैसे परिवार का पोषण कर रहा था। करीब 7–8 माह पूर्व उन्हीं के गांव का एक दिव्यांग नारायण सेवा संस्थान, उदयपूर में पांव का ऑपरेशन करवाकर आराम से चलता हुआ जब घर लौटा तो उसे देख कानू को भी अपनी बिटिया के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। अप्रेल 2021 में माता–पिता लिंकन को लेकर संस्थान में आए, जहां उसके दांए पंजे का सफल ऑपरेशन हुआ और इस वर्ष 10 अगस्त को वह दूसरे पंजे और घुटने के ऑपरेशन के लिए आए, 14 अगस्त को यह ऑपरेशन सफल रहा। पहले वाले पंजे के ठीक होने से माता–पिता को बाएं पांव के भी पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है तो लिंकन अन्य बच्चों की तरह चलने–दौड़ने को मचल रही है।

निशा को मिला नया सवेरा

बेतिया (बिहार) की रहने वाली निशा कुमारी (15) का बांया पैर जन्म से ही वि.त अर्थात् छोटा था। पैरो के इस असंतुलन को देख पिता चान्देश्वर शाह व माता चंदादेवी सहित पूरा परिवार चिंतित रहा। किसी ने बताया कि थोड़ी बड़ी होने पर बच्ची का पांव स्वतः ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा न होने पर माता–पिता की चिंता और अधिक बढ़ गई। अस्पताल में दिखाने पर ऑपरेशन का काफी खर्च बताया। जो इनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था।

पिता बाजार में सब्जी का विक्रय करते हैं, एवं माता–पिता खेतीहर मजदूर है। निशा के दो भाई और और दो बहनें हैं। कुल मिलाकर परिवार में सात सदस्य हैं, जिनका पोषण माता–पिता की कमाई से बामुश्किल हो पाता है। कुछ ही समय पूर्व दिल्ली में रहने वाले इनके करीबी रिश्तेदार भूषण शाह ने टीवी पर नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क पोलियो सुधार ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग वितरण के बारे में कार्यक्रम देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तत्काल निशा के पिता को सूचित किया।

बिना समय गंवाए संस्थान चान्देश्वर और उनके साढू वासुदेव शाह जुलाई के पहले सप्ताह में ही निशा को लेकर उदयपुर संस्थान मुख्यालय पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसकी जांच कर 'एक्सटेंशन प्रोस्थेटिक' (कृत्रिम अंग) लगाया।

इसके लगने से निशा के दोनों पांवों में संतुलन है और वह बिना सहारे चल सकती है। निशा के भविष्य के प्रति चिंतित पूरा परिवार अब प्रसन्न है।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिश्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

हार्ट पेशेन्ट मेरे दादा जी एक शादी में गए, वहां उन्हें सर्दी जुकाम की शिकायत हो गई। कोरोना रिपोर्ट करवाई जो कि पॉजिटिव आई। डॉक्टर्स ने होम आइसोलेट रहकर ट्रीटमेंट लेने की बोला। घर पर केयर करने के लिए हमने नारायण सेवा संस्थान से मदद मांगी, तो हमें हेड्रोलिक बेड और ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करवाया। 10 दिनों में दादाजी रिकेवर हो गए। इस सहयोग के लिए संस्थान का आभार।

– प्रेम अहारी, बड़गांव

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

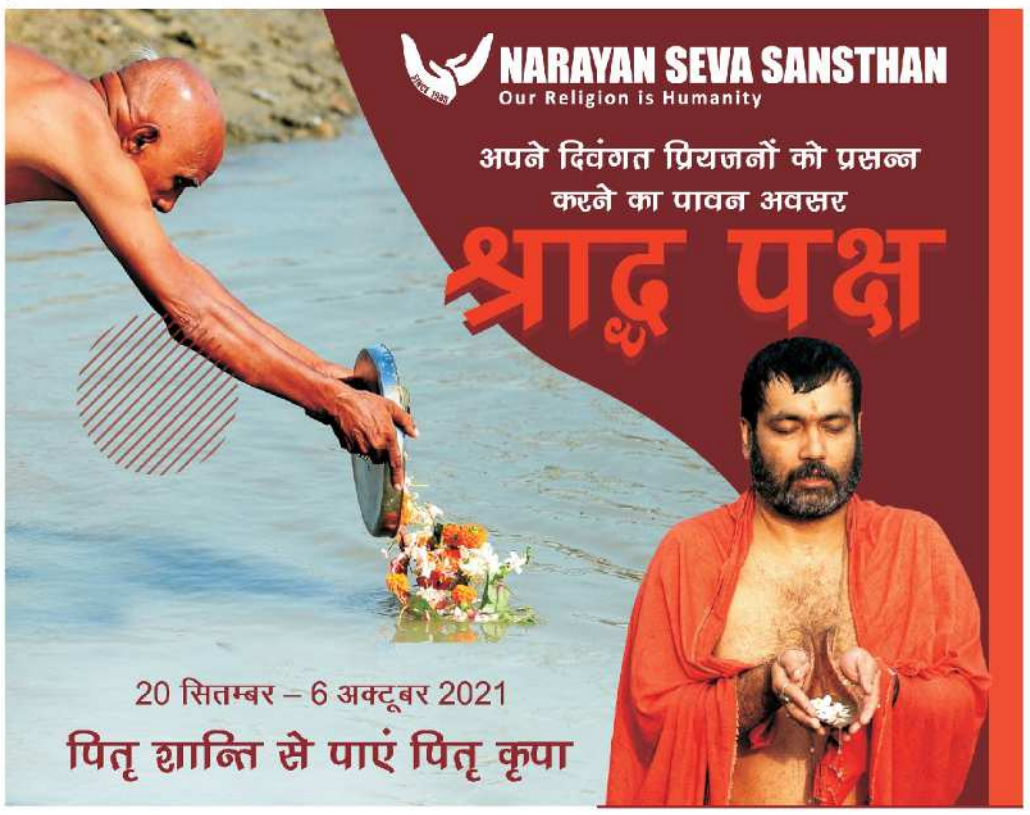

श्राद्ध तिथि ब्राह्मण भोजन सेवा	श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा	सप्तदिवसीय भागवत मूलपाठ, श्राद्ध तिथि तर्पण व ब्राह्मण भोजन सेवा
₹5100	₹11000	₹21000

Bank Name: State Bank of India
Account Name: Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Paytm

UPI
yono SBI | SBI Payments
UPI Address for Indian donors which is narayanseva@SBI

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ध्रुव की कथा सुनी, श्रीमद्भागवत महापुराण में। छोटे से बच्चे ने कितना तप किया, कितनी उपासना की ॐ नमोः भगवते वासुदेवाय। और श्री हरि भगवान प्रकट हो गये। हरि भगवान के कहा – तूं मांग ले ध्रुव। और ध्रुव बोला – भगवान मुझे मांगना नहीं आता ? मैंने मांगने के लिए तपस्या की ही नहीं है। मैंने आपको पाने के लिये की है, आपको स्पर्श करने के लिये की है। मैं आपकी गोद में बैठना चाहता हूँ। मैं आपके आँचल में विश्राम करना चाहता हूँ। मैं आपके कंधे पे सिर लगा के रोना चाहता हूँ। मेरी ही माता ने मुझे कहा था – यदि तुम्हारे राजा पिता की गोद प्राप्त करना हो, अगले जन्म मेरी कोख से लेना। मैं इसी जन्म से आपके कंधे पे रहकर रोने के साथ, में हर्ष के आँसू लाना चाहता हूँ। क्योंकि रोए तो सभी हैं आपमें – हमारे में कौन कह सकता है कि रोया कोई नहीं है ? आपकी डायरी में एक – दो लाईने लिख दीजियेगा। बार – बार दोहराईयेगा बहुत काम आएगी।

हर आँख यहा
यूं तो बहुत रोती है,
हर बूंद मगर
अश्क नहीं होती है।
देख कर रोंदे
जो जमाने का गम,
गिरे उस आँख से
आंसू वह मोती है।।

सम्पादकीय

अनेक शास्त्रों ने धर्म के विविधि स्वरूप बताये हैं। भारतीय अध्यात्म जगत में धर्म की वृक्ष से अनेक प्रसंगों में तुलना की गई है। धर्म वृक्ष के विविध अंगों में कई अध्यात्मवेत्ताओं ने दया को धर्मरूपी वृक्ष की जड़ कहा है। दया का भाव ही मूल बताया गया है। जैसे वृक्ष को जीवित रखने, सुदृढ़ बनाये रखने तथा विस्तार देने के लिए जड़ का महत्व स्वतः सिद्ध है, वैसे ही धर्मरूपी वृक्ष के लिए दया का महत्व है। दया रूपी जड़ से धर्म रक्षित होता है। यह दया भाव मानव मात्र में पूर्णतया विद्यमान होता है। फिर भी हम पाते हैं कि कोई–कोई मनुष्य कभी–कभी निर्दयता का व्यवहार भी कर बैठता है। सचाई तो यह है कि वह अपने मूल स्वभाव को जब–जब विस्मृत कर बैठता है, तब–तब उससे निर्दयतापूर्ण कृत्य हो जाते हैं। अपने मूल स्वभाव को सही स्थिति में बनाये रखने के लिए ही दया का निरंतर अभ्यास बताया गया है। यह अभ्यास प्राणिमात्र की सेवा, उचित कार्य के लिये दान आदि से बना रह सकता है। हम अपने स्वभाव को दयामय यानी धर्ममय बनाये रखना चाहें तो सद्कार्य करते रहें।

कुछ काव्यमय

दिल में दया निवास हो,
मन में हो संतोष।
समझो उसको मिल गया,
कुबेर वाला कोष।।
दया धर्म का मूल है,
बोले तुलसीदास।
धर्म भला कैसे तजें,
जब तक है ये सांस।।
दया भाव से जो जिये,
वो ही है इंसान।
मानव को ही है मिला,
दया भाव वरदान।।
दीनों पर करते दया,
वे ही बने रसूल।
हरि प्यारा बनना चहे,
दया भाव मत भूल।।
दया मोक्ष का द्वार है,
मुक्ति का है प्रयास।
दया भाव जिस घट बसे,
वहीं है प्रभु प्रकाश।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मानवीयता

बहनों–भाइयों बड़े भाग्य से–

नर तन सम नहिं कवनऊ देही।
जीव चराचर जाँचत तेही।

ऐसी देह मिल गयी। और देह मिलने के साथ में शाकाहारी परिवार मिल गया। देह तो कसाई को भी मिलती है। देह तो नॉनवेज खाने वालों को भी मिलती है। देह तो पशु–पक्षियों का वध करने वालों को भी मिलती है। वो इंसानियत की देह है, लेकिन इंसान नहीं वो हैवान है। जिसमें पशुओं को मारने का पाप कर लेते है। जो नॉनवेज खाने का पाप करके अपने पेट को कब्रगाह बना लेते है। जो नशा करके अपने शरीर को खराब कर देते है। जो परिवार को कलंकित कर देते है जिनके पितृ भी बहुत श्राप देते है। ऐसे नर में नर नहीं है, वो नर पशु है, जिनमें ज्ञान नहीं होता– बाबू।

रोहित जी– गुरुदेव एक भाई लिखते है, आपको प्रणाम करते हैं, आपके प्रवचन तो देखते है, मगर इनके जो दो दोस्त है, वो हमेशा एक–दूसरे से गप्पे लगाते रहते है। गप्पे भी ऐसी एक ने दूसरे से कहा मेरे भाई ने 200 रन बनाये तो उसने कहा मेरा भाई तो रोज 400 रन बनाते है, और इस गप्प की वजह से आपस में दोनो एक–दूसरे से झगड़ने लगते है?

गुरुदेव– हाँ, समय का भेद है, रोहित जी, और झगड़ा– कुटिल जो गप्पे लगाते है मन में शराबखोरी हो जाती है, नशा भी हो जाता है। नाना प्रकार के अवगुण आ जाते है, हमारे तो बापूजी बचपन में कथा सुनाते है, एक गप्पीराम थे, उनकी पत्नी ने कहा ये पड़ौस वाली माता और बहनें मुझे चिढ़ाती है। गप्पी जी की बहू आ गई, तो आप गप्प छोड़ दो, अब वो कहते ठीक है, हलवा वगैराह बना दो, लाडू बना दो मैं जाऊंगा, दो दिन में गप्प छोड़कर आ जाऊंगा, और दो–दो दिन भगे– भगे अरे शेर पीछा कर रहा है। सड़क पर चने के वृक्ष पर चढ़ गया। चने का कौनसा वृक्ष होता है– महाराज! चने का तो पौधा होता है, तो ऐसे गप्पों से समय है, कहाँ जो आप अपव्यय करो? इतना समय कहाँ से आ गया? आपके पास में

और मैं तो आज सुबह स्वाध्याय में कह रहा था, ये भी नहीं कहना चाहिए था, कि समय कम पड़ता। समय न कम पड़ता है, न ज्यादा पड़ता है। समय न चक्रवर्ती सम्राट का दास है, न भिखारी के लिए दुर्लभ है, समय तो समय है।

है समय बड़ा बलवान कि,
पर्वत भी झुक जाया करते हैं।
अक्सर समय के चक्कर में,
सब चक्कर खाया करते हैं।।
पर कुछ ऐसे होते हैं,
जो इतिहास बनाया करते हैं।।

आज इतिहास बनावे तो बचत का। ये हमारा शीतल भैया ने ये लाकर रख दिया, एक दस का नोट भी इसके अन्दर है। ऐसे–ऐसे बचत करें। अपने बच्चों की भी आदत डालें, और बच्चों में आदत कब डाल पाऐंगे? जब आपकी आदत पड़ेगी। कोई सेविंग बैंक में करावें, कुछ पोस्ट ऑफिस में जमा करावें, आर.डी. अकाउन्ट खोल देवें। तो नारायण सेवा संस्थान् के नाम का पोस्ट ऑफिस खुल गया है। जब आप यहाँ ईलाज के लिए आते हैं आपके सगे, सम्बन्धी आते है, दानवीर महोदय पधारते है। आप किसी भी तरह का ट्रॉन्जेक्शन कर सकते है। यहाँ इस पोस्ट ऑफिस में डिजीटल पर्ची जमा करावें। भारत के किसी भी पोस्ट ऑफिस में आप निकाल सकते हो। आर.डी अकाउन्ट भी खुलवा सकते है– लाला। कुछ ऐसे होते है जो इतिहास बनाया करते है। सुमित्रा जी ने भी एक इतिहास बनाया। सुमित्रा जी जब पधारी उनके साथ उर्मिला जी थी, और सुमित्रा जी ने जैसे सुना मेरी जीजी बाई बोल रही है, उनके पैर पड़ूंगी मैं। अरे! कैकयी के पडेंगी? कैकयी जिनकी मति भ्रष्ट हो गई, भ्रम हो गया जो मंदमति मंथरा के बहकावे में आ गई है। वहीं से बोलती है–

नहीं–नहीं ये कभी नहीं,
दैन्य विषय बस रहे यहीं।
रुके राम जननी जब तक,
गूंजी नहीं गिरा तब तक।।

गिरा कहते है जीह्वा को, जब तक कौशल्या माता जी ने बोला उसी क्षण सुमित्रा माताजी ने सुन लिया था। ये अनर्थ हो रहा है, अन्याय हो रहा है। राम भगवान स्थिर बुद्धि, स्थित प्रज्ञ न व्याकुलता है, न मन में व्यग्रता, आज सुबह मन में विचार आ रहा था। श्रीराम भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम है, और कृष्ण भगवान भी अवतार थे। कृष्ण भगवान ने गीता जी में जो 12 वें– 13 वें अध्याय में कहते हैं, अर्जुन कौन से भक्त मुझे प्रिय है? वो सब गुण भगवान श्रीराम में।

वो तो अपने भक्त के कारण है, कृष्ण भयो रघुनाथ गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज जब वृन्दावन में पहुँचे, बांके बिहारी जी के मन्दिर में पहुँचे, बोले धनुष–बाण हाथ में ले लो। मेरे राम बन जाओ, कृष्ण भगवान राम बन गये। बांके बिहारी जी राम बन गये।

– कैलाश 'मानव'

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

1985 की बात है। कैलाश अस्पताल के वार्डों में घूम रहा था, उसके झोले में फल–बिस्किट थे। सभी रोगियों को राम राम करते वह फल वितरित कर रहा था। तभी वार्ड बोय भोजन की ट्रोली लेकर आ गये। कैलाश भोजन वितरित करने वालों की मदद करने लगा। थालियां निकाल कर वह रोगियों को देने लगा। एक रोगी ने दो रोटियां निकाली और अपने पास रखे एक कटोरे में रख दी, उसने बाकी बची सिर्फ एक रोटी खाई। कैलाश यह सब देख रहा था, रोगी के इस कार्य से वह अचम्भे में था, उसने बरबस ही रोगी से पूछ लिया कि एक रोटी से आपका क्या होगा?

कैलाश के प्रश्न करते ही रोगी भाव विह्वल हो गया और उसकी आंखों से आसूं टपक पड़े। कैलाश सकपका गया कि उसने ऐसा क्या कह दिया जिससे रोगी इतना आहत हो गया।?? वो कुछ कहे इसके पहले ही रोगी भर्राई आवाज में बोल पड़ा, मेरा बेटा और भाई बाहर बैठे हैं, हमारे पास जहर तक खाने के पैसे नहीं हैं, ये दो रोटियां उन्हीं के लिए रख ली हैं। एक मैंने खा ली और एक एक दोनों काका–भतीजा भी खा लेंगे। तीन दिन से मैं यही कर रहा हूं। भूख तो बहुत लगती है, रात को नींद भी नहीं आती पर क्या करें, यहां तो खाना निश्चित मात्रा में ही मिलता है उसी से काम चला रहे हैं। अब बारी कैलाश की आंखों में आंसू आने की थी। रोगी के बातों से उसका हृदय ऐसा विदीर्ण हुआ जैसे किसी ने कटार चला दी हो। वेदना से आहत कैलाश किंकर्तव्यविमूढ सा रोगी को अपलक देख रहा था तभी उसने अपनी जेब से मुड़ा तुड़ा कागज का एक पर्चा निकाल कर उसके सामने किया, बोला डॉ. साहब ने ये दवाइयां लिख कर दी हैं मगर लाऊं कहां से? कैलाश ने उसे सांत्वना दी कि वह कुछ करेगा फिर उसे कटोरी में रखी दोनों रोटी खा लेने को कहा। उसने रोगी से पर्चा लिया और भाई व बेटे की जानकारी ले वह बाहर आया।

दोनों का पता कर वह उन्हें अस्पताल के सामने ही एक होटल में ले गया और उन्हें खाना खिलाया, फिर पर्ची लेकर दवाइयां खरीदी और वापस रोगी को देकर आया। जब उसने बताया कि उसके भाई–भतीजे को खाना खिला दिया है तो वह हाथ जोड़ कर रोने लगा। कैलाश ने उसे दिलासा दिया और वचन दिया कि वह उन सबकी पूरी देखभाल करेगा।

अंश - 113

आपकी क़ीमत कितनी ?

एक आदमी लोहे का काम करता था। एक दिन जब वह अपना काम कर रहा था तो उसके पास बैठे उसके बच्चे ने उससे पूछा –पापा ! मनुष्य की क़ीमत कितनी है ? उसके कहा कि बेटा मनुष्य की कीमत तो बहुत है।

बच्चे की जिज्ञासा यहीं शांत नहीं हुई, उसने पुनः प्रश्न किया–पापा! फिर एक आदमी अमीर और दूसरा गरीब क्यों है ?

वह समझ गया कि बच्चा जिज्ञासु है, इसे विस्तार से समझाना पड़ेगा। उसने कहा–बेटा अन्दर से लोहे की रॉड लेकर आओ। बेटा भागकर जाता है, और अन्दर से रॉड लेकर आता है।

उसने पूछा–बेटा ! यह लोहे की रॉड कितने की होगी ? बच्चे ने कहा –200 रुपये की होगी।

पापा–अच्छा, अगर मैं इस रॉड के छोटे–छोटे टुकड़े करके इसकी कीलें बना दूँ तो इसकी कीलों की क़ीमत कितनी हो जायेगी ?

बच्चा मन ही मन गणना करता है, और कहता है – लगभग 1000 रुपये हो जायेगी।

पापा – और अगर इसी लोहे का इस्तेमाल करके घड़ी के छोटे–छोटे स्प्रिंग्स बना दूँ तो कितनी कीमत हो जायेगी ?

बच्चा–अगर इसके स्प्रिंग्स बना देंगे तो इसकी कीमत और भी बढ़ जायेगी।

उस पिता ने बच्चे को समझाते हुए कहा –बेटा ! इसी तरह मनुष्य की क़ीमत भी उसके गुणों से होती है। अगर लोहा ही बने रहोगे तो क़ीमत कम होगी, अगर अपने अंदर सुधार करके, योग्यता को बढ़ा कर, कील की तरह बनोगे तो क़ीमत और बढ़ जाएगी और अगर अपनी प्रतिभा का कौशल के और अधिक विकसित करके स्प्रिंग की तरह बनोगे तो और भी अधिक क़ीमती हो जाओगे।

व्यक्ति के अन्दर जितने गुण होंगे, उसकी क़ीमत भी उतनी ही अधिक होगी। जितने कम गुण होंगे, उसकी क़ीमत भी उतनी ही कम होगी। अगर आपके अंदर दुर्गुण हैं तो आपकी क़ीमत कुछ भी नहीं, और अगर भीतर सद्गुण हैं तो आप अनमोल हैं।

उपयोगी सूत्र

1. किस्मत की बातें भूलें, करें इरादा पक्का।
2. अपनी असफलता से निराश न हों और ना ही रोना रायें।
3. स्वच्छ, स्पष्ट और उच्च सोच के साथ करें हर काम।
4. कृपणता और हिसाब – किताब लगाना छोड़ दें, आप जीत जायेंगे।

– सेवक प्रशान्त भैया

सुविचार

'जिदगी वन–डे मैच की तरह है,'
'जिसमें रन तो बढ़ रहे है'
'पर ओवर घट रहे हैं'
'मतलब धन तो बढ़ रहा है'
'पर उम्र घट रही है।'
'इसलिए हर दिन
कुछ न कुछ पुण्य के'
'चौके छक्के लगायें...'
'ताकि ऊपर बैठा एम्पायर हमें'
'खुशियों की ट्रॉफी दे ....!'
"खुश रहिये, मुस्कुराते रहिये'

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु कराये तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

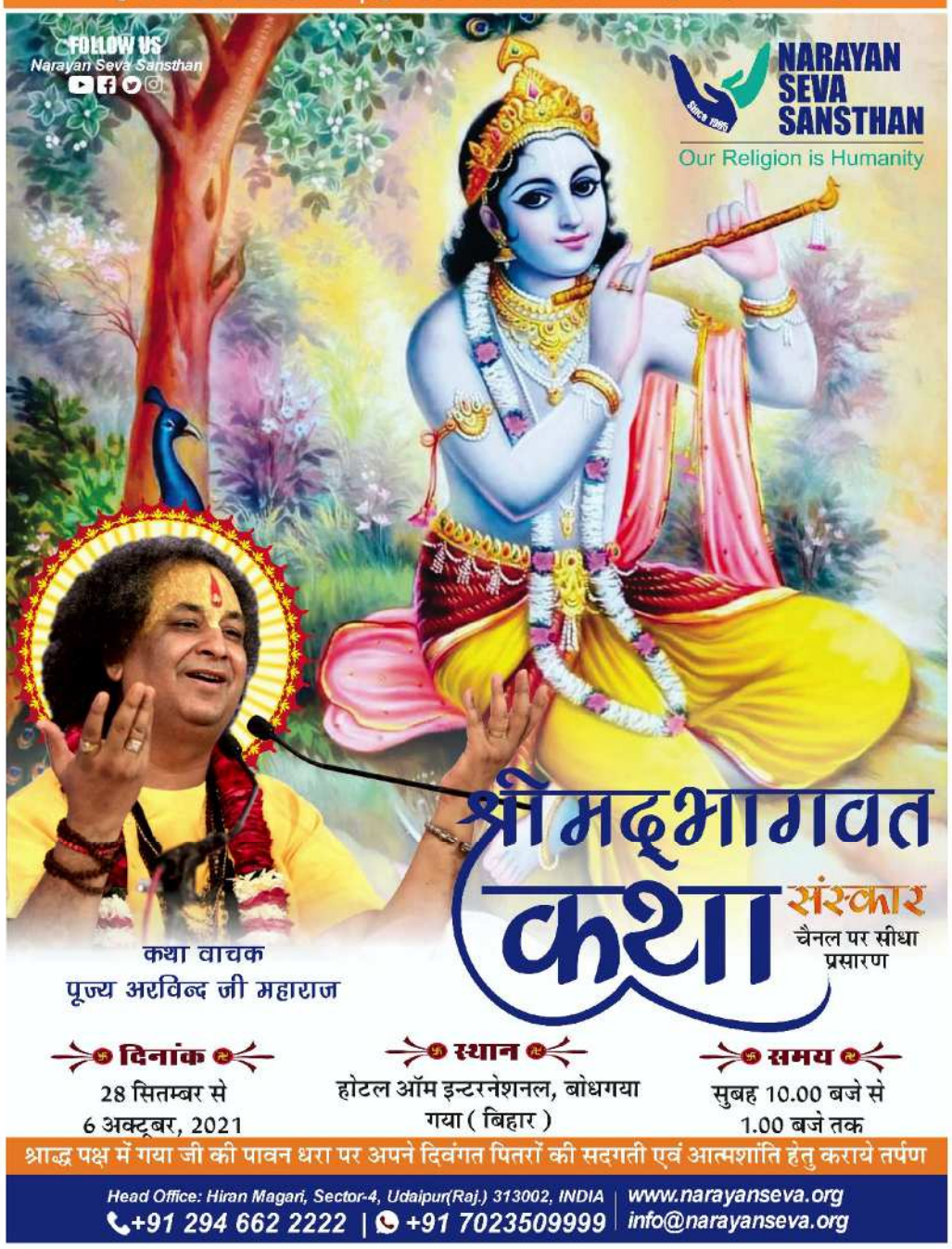

श्राद्ध पक्ष में गया जी की पावन धरा पर अपने दिवंगत पितरों की सदगती एवं आत्मशांति हेतु कराये तर्पण

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

अनुभव अमृतम्

एक जैन साहब जो भूपालपुरा में रहते हैं बड़े उत्साही समाज के सेकेट्री थे। बोले– भाई लिखता हूँ। और बोलिये भाईसाहब, और बोलिये भाईसाहब। मेरा नाम लिख दीजिए जवाहरमल जी जैन। 86 बोरियाँ हो गयी, 86 बोरी लिख ली। कल और लिखवायेंगे साहब, कल और हमारे सम्बन्धी को भी लायेंगे, बड़े दानी है वो भी लिखेंगे। दूसरे दिन बीस बोरी और लिखाई, एक सौ छः बोरी हो गयी। जहाँ महाराजजी ने सौ बोरी का संकल्प लिया था, वहाँ एक सौ छः बोरी हो गयी। बड़ा आनन्द, बड़ा आनन्द परमानन्द। गेहूँ भेज रहे हैं पिसवाने के लिये।

पूज्य बापूजी ने पिताश्रीजी ने कहा था– कैलाश, ये आटा तुम इकट्ठा करते हो, जल्दी वापर लेना। बहुत दिन पड़ा मत रखना, इसमें कीड़े पड़ जायेंगे तो मुश्किल होगी। जी बापूजी, आपने बहुत अच्छी बात कही। गेहूँ पिसवाया गया, लाया गया। सतु बनाया गया, उन्दरी में पहुँच गये। 114 रोगियों का इलाज हुआ, उनको दवाइयाँ दी गयी। सात सौ ईठयासी लोग कुल आये।

बच्चों के लिये कपड़े, महिलाओं के लिये कपड़े, पुरुषों के लिये कपड़े। ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया। कैलाश एक साढ़े तीन हाथ की काया का नाम। एनोटामी में सभी के लगभग वो ही दो सौ छः हड्डियाँ, पाँच सौ उन्नीयासी मांसपैशियाँ, ये अस्थि तंत्र, ये रूधिर तंत्र, चार सौ किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से दौड़ने वाला खून, रक्त, शिराएं, धमनियाँ। हाँ, महाराज इस बंगले को पावन करो।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 240 (कैलाश 'मानव')

जानें हाथ धोने का सही तरीका

हाथों को कीटाणुक्त करने के लिए साबुन से 40–60 सेकंड तक हाथों को रगड़ते हुए साफ करना चाहिए। जानते हैं सही तरीका –

साबुन : सबसे पहले गीले हाथों पर लिक्विड साबुन या अन्य साबुन लेकर अच्छी तरह से रगड़ें।

हाथों के पीछे : हथेली पर साबुन लगाने के बाद पीछे साबुन लगाएं और अंगुलियों के बीच में साबुन से रगड़े।

मुट्टी बंद करें : सभी अंगुलियां मिलाकर रगड़े। हथेली को विपरीत अवस्था में रखते हुए इंटरलॉक करें।

हाथ धोएं : अंगुलियों के बाद अंगूठा रगडें। नाखूनों को हथेली पर रगड़कर पानी से हाथ धोएं।

सुखाएं : हाथों को धोने के बाद उन्हें अच्छी तरह से सुखाना भी जरूरी है। साफ तौलिए से साथ सुखाएं।

कीटाणुमुक्त : हाथों को सुखाने के लिए हैंड ड्रायर को भी प्रयोग कर सकते हैं। कीटाणुमुक्त हो जाएंगे हाथ।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्साक से सलाह अवश्य लें।)

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023